कौवे और उल्लू का बैर

एक बार हंस, तोता, बगुला, कोयल, चातक, कबूतर, उल्लू आदि सब पक्षियों ने सभा करके यह सलाह की कि उनका राजा वैनतेय केवल वासुदेव की भक्ति में लगा रहता है, व्याधों से उनकी रक्षा का कोई उपाय नहीं करता; इसलिये पक्षियों का कोई अन्य राजा चुन लिया जाय। कई दिनों की बैठक के बाद सब ने एक सम्मति से सर्वाङग सुन्दर उल्लू को राजा चुना।

अभिषेक की तैयारियाँ होने लगीं, विविध तीर्थों से पवित्र जल मँगाया गया, सिंहासन पर रत्न जडे गए, स्वर्णघट भरे गए, मंगल पाठ शुरु हो गया, ब्राह्मणों ने वेद पाठ शुरु कर दिया, नर्तकियों ने नृत्य की तैयारी कर लीं, उलूक राज राज्यसिंहासन पर बैठने ही वाले थे कि कहीं से एक कौवा आ गया।

कौवे ने सोचा यह समारोह कैसा? यह उत्सव किस लिए? पक्षियों ने भी कौवे को देखा तो आश्चर्य में पड गए। उसे तो किसी ने बुलाया ही नहीं था। भिर भी, उन्होंने सुन रखा था कि कौआ सब से चतुर कूटराजनीतिज्ञ पक्षी है; इसलिये उससे मन्त्रणा करने के लिये सब पक्षी उसके चारों ओर इकट्ठे हो गए।

उलूक राज के राज्याभिषेक की बात सुन कर कौवे ने हँसते हुए कहा, "यह चुनाव ठीक नहीं हुआ। मोर, हंस, कोयल, सारस, चक्रवाक, शुक आदि सुन्दर पक्षियों के रहते दिवान्ध उल्लू ओर टेढी नाक वाले अप्रियदर्शी पक्षी को राजा बनाना उचित नहीं है। वह स्वभाव से ही रौद्र है और कटुभाषी है। फिर अभी तो वैनतेय राजा बैठा है। एक राजा के रहते दूसरे को राज्यासन देना विनाशक है। पृथ्वी पर एक ही सूर्य होता है, वही अपनी आभा से सारे संसार को प्रकाशित कर देता है। एक से अधिक सूर्य होने पर प्रलय हो जाती है। प्रलय में बहुत से सूर्य निकल जाते हैं, उन से संसार में विपत्ति ही आती है, कल्याण नहीं होता । राजा एक ही होता है । उसके नाम-कीर्तन से ही काम बन जाते हैं।

"यदि तुम उल्लू जैसे नीच, आलसी, कायर, व्यसनी और पीठ पीछे कटुभाषी पक्षी को राजा बनाओगे तो नष्ट हो जाओगे ।

कौवे की बात सुनकर सब पक्षी उल्लू को राज-मुकुट पहनाए बिना चले गये। केवल

अभिषेक की प्रतीक्षा करता हुआ उल्लू उसकी मित्र कृकालिका और कौवा रह गये।
उल्लू ने पूछा, "मेरा अभिषेक क्यों नहीं हुआ?"
कृकालिका ने कहा, "मित्र! एक कौवे ने आकर रंग में भंग कर दिया। शेष सब पक्षी उडकर चले गये हैं, केवल वह कौवा ही यहाँ बैठा है ।"
तब, उल्लू ने कौवे से कहा, "दुष्ट कौवे! मैंने तेरा क्या बिगाडा था जो तूने मेरे कार्य में विघ्न डाल दिया। आज से मेरा तेरा वंश परम्परागत बैर रहेगा।"
यह कहकर उल्लू वहाँ से चला गया। कौवा बहुत चिन्तित हुआ और वहीं बैठा रहा। उसने सोचा, "मैंने अकारण ही उल्लू से बैर मोल ले लिया। दूसरे के मामलों में हस्तक्षेप करना और कटु सत्य कहना भी दुःखप्रद होता है।"
यही सोचता-सोचता वह कौवा वहाँ से चला गया। तभी से कौओं और उल्लुओं में स्वाभाविक बैर चला आता है।

कौव ाऔर उल्लू ा राे

ाएक बार हंस, ताेते, बगलुा, कबैल, चातक, कबतूर, उल्लू आदि सब पक्षियों ने मिलकर सलाह की कि उनका राजा वनैतये कवेल वासदुवे की भक्ति में लगा रहता है, व्याध से उनकी रक्षा का कोई उपाय नहीं करता; इसलिये पक्षियों का कोई अन्य राजा चुन लिया जाय। कई दिनों की बठैक के बाद सब ने एक सम्मति से सबै वाहे गा सनु्दर उल्लू को राजा चुना।
अभिषके की तयैारियाँ होने लगीं, विविध तीर्थों से पवित्र जल मँगाया गया, सिंहासन पर रत्न जड़े गाए, स्वर्ण घट भरे गाए, मंगल पाठ शरु हो गया, ब्राह्मणों ने वदे पाठ शरु कर दिया, नर्तकियों ने नतृ्य की तयैारी कर ली, उल्लू राजा राजसिंहासन पर बठैने ही वाला था कि कहीं से एक कौवा आ गया।
कौवे ने सोचा यह समारोह कसैा? यह उत्सव किस लिए? पक्षियों ने भी कौवे को देखा तो आश्चर्य में पड़ गाए। उसे तो किसी ने बलुाया ही नहीं था। फिर भी, उन्होंने सनु रखा था कि कौआ सब से चतरु कटूराजनीतिज्ञ पक्षी है; इसलिये उससे मन्त्रणा करने के लिये सब पक्षी उसके चारों ओर इकट्ठे हो गाए।
उल्लू राजा के राज्याभिषके की बात सनुकर कौवे ने हँसते हुए कहा, "यह चनुाव ठीक नहीं हुआ। मोर, हंस, कबैल, सारस, चक्रवाक, सकुा आदि सनु्दर पक्षियों के रहते दिवान्ध उल्लू और टढ़ेी नाक वाले अप्रियदर्शी पक्षी को राजा बनाना उचित नहीं है। वह स्वभाव से ही रौद्र है और कटुभाषी है। फिर अभी तो वनैतये राजा बठैा है। एक राजा के रहते दूसरे को राज्यासन दनेा विनाशक है। पृथ्वी पर एक ही सूर्य होता है; वही अपनी आभा से सारे ससंार को प्रकाशित कर देता है। एक से अधिक सूर्य होने पर प्रलय हो जाती है। प्रलय में बहुत से सूर्य निकल आते हैं; उन से ससंार में विपत्ति ही आती है, कल्याण नहीं होता। राजा एक ही होता है। उसके नाम-कीर्तन से ही काम बन जाते हैं।
"यदि तुम उल्लू जसैे नीच, आलसी, कायर, व्यसनी और पीठ पीछे कटुभाषी पक्षी को राजा बनाओगे तो नष्ट हो जाओगे।"
कौवे की बात सनुकर सब पक्षी उल्लू को राज-मकुुट पहनाए बिना चल गये। केवल अभिषके की प्रतीक्षा करता हुआ उल्लू, उसकी मित्र कृकालिका और कौवा रह गया। उल्लू ने पूछा, "मेरा अभिषके क्यों नहीं हुआ?"
कृकालिका ने कहा, "मित्र! एक कौवे ने आकर रंग में भंग कर दिया। शषे सब पक्षी उड़कर चले गये हैं, केवल वह कौवा ही यहां बठैा है।"
तब, उल्लू ने कौवे से कहा, "दुष्ट कौवे! मैंने तेरा क्या बिगाड़ा था जो तूने मेरे कार्य में विघ्न डाल दिया। आज से मेरा तेरा वंश परम्परागत बरै रहेगा।"
यह कहकर उल्लू वहां से चला गया। कौवा बहुत चिन्तित हुआ और वहीं बठैा रहा। उसने सोचा, "मैंने अकारण ही उल्लू से बरै मोल ले लिया। दूसरे के मामले में हस्तक्षेप करना और कटु सत्य कहना भी दुःखप्रद होता है।"
यही सोचते-सोचते वह कौवा वहां से चला गया। तभी से कौओं और उल्लुओं में स्वाभाविक बरै चला आता है।

अनुवाद - विष्णु कौल हेला